## पद १८

दया करी श्रीमाणिका मां पाहि रे। त्राता त्रिजगदंतरी तुजविण

काढीं। त्रिविधतापें वेधिलों, वेदना ही तोडी।।२।। शरण मी जाऊं

कवणा। तारी तारी मज नत मनोहर दीना रे।।३।।

(राग: यमन - ताल: त्रिताल)

नाहीं रे।।ध्रु.।। काम क्रोध अहंकार त्रिपुटीचें स्थान। लोभ मोह मत्सरादि कापूं पहाति मान ।।१।। भवतोय सागरडोहीं बुडतों मी